Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 5, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-4044

राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा और नागरिक-जीवन का स्वास्थ्य-संदर्भ: हनुमानबाहुक के विशेष संदर्भ में

डॉ नर्वदेश्वर पाण्डेय[1]

[1]*सह-आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजीय अध्ययन (सैन्य- विज्ञान),*
का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय-अयोध्या।

शोध सारांश

वर्तमान समय में राष्ट्रीय सुरक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है, युद्ध के दौरान केवल सेनाएं ही नहीं लड़ती है, बल्कि देश की सुरक्षा के लिए उस देश की पूरी जनता युद्ध लड़ती है। कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली तभी रह सकता है, जब उस देश की जनता स्वास्थ्य एवं निरोग रहे। वर्तमान समय में शत्रु राष्ट्र अपने आक्रमण का केंद्र सैनिकों को ना बनाकर उस देश की जनता को अपने आक्रमण का केंद्र बिंदु मान रहा है इसका ज्वलंत उदाहरण चीन द्वारा जैविक हथियार के रूप में कोविड-19 की उत्पत्ति है जिसके कारण आज पूरा संसार त्राहि-त्राहि कर रहा है। देश की सुरक्षा के लिए स्वस्थ समाज का होना अत्यंत आवश्यक है 2020 और 2021 में भारत ही नहीं, विश्व के लिए स्वास्थ्य के मायने ही बदल गए हैं महामारी से लड़ने और जीतने के लिए बुनियादी ढांचे को सशक्त करने के लिए अथक प्रयास किए गए, किंतु उतनी सफलता नहीं मिली है जितनी मिलनी चाहिए, बल्कि कोराना महामारी बढती जा रही है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। इनकी रचना मानव कल्याण के लिए हुई है उसमें तुलसीकृत श्री हनुमान बाहुक रचना है जो तत्कालीन समय में महामारी के निवारण के लिए किया था, ऐसी मान्यता है कि इससे महामारी का निवारण हुआ था।

शब्द कुञ्जीः राष्ट्रीय सुरक्षा, अपारम्परिक खतरे, महामारी, तुलसीदास, कवितावली, श्रीहनुमानबाहुक आदि।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

राष्ट्रीय सुरक्षा

राष्ट्रीय सुरक्षा के अंतर्गत ऐसी परिस्थितियां कायम करने के प्रयास किए जाते हैं जिनके आधार पर कोई राष्ट्र संभावित खतरों का दृढ़ता पूर्वक सामना करने की क्षमता प्राप्त कर सकता है। प्रतिरक्षा के अंतर्गत वे सभी क्रियात्मक उपाय आते हैं जिनसे वास्तविक खतरों का सामना कारगर तरीके से किया जाता है[1] दूसरे शब्दों में वाह्य हस्तक्षेप, जासूसी संबंधी कार्यवाहियों तथा विध्वनशक कार्यवाहियों के विरुद्ध कारगर तरीके से किए जाने वाले सभी प्रकार के बचाव सुरक्षा के अंतर्गत आते हैं। वस्तुतः सैन्य सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अवएव मात्र है। सुरक्षा के अर्थ एवं उसके महत्व को निम्नलिखित तरीके से व्यक्त किया जा सकता है:[2]

(अ) सुरक्षा का अर्थ प्रादेशिक अखंडता संप्रभुता एवं जनता के जीवन और उसकी संपत्ति को अक्षुण्ण बनाए रखने से है। यहां पर ध्यान देने योग्य है कि कोरोना महामारी के कारण पूरी मानव व्यवस्था तहस-नहस हो गई है।

(ब) अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में सुरक्षा का अर्थ प्रमुखतः वाह्य सुरक्षा से है। कोरोनावायरस जिस का उत्पत्ति स्थान चीन है, वहीं से पूरे विश्व में फैला है। पड़ोसी राष्ट्र होने के कारण भारत सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है।

(स) दीर्घकालीन एवं टिकाऊ सुरक्षा आर्थिक विकास परिपक्व राजनय तथा गैर लड़ाकू विदेश नीति पर ही आधारित है। कोरोना महामारी के कारण विदेश नीति पर बुरा प्रभाव पड़ा है महाशक्ति के रूप में अमेरिका बिखर चुका है यहां तक की चीन के प्रति प्रतिबंध लगाने की मांग उठ रही है।

(द) राष्ट्रीय सीमांत के बाहर सैन्य सुरक्षा पद्धति में साम्राज्यवाद के बीज अंतर्निहित होते हैं। कोरोनावायरस से पूरा विश्व प्रभावित हो रहा है तो चीन अपना साम्राज्यवाद बढ़ाने में लगा हुआ है इसके लिए ताइवान, हांग कांग तथा भारत के सीमांत क्षेत्रों पर अनावश्यक अतिक्रमण कर रहा है।

संकल्पनात्मक ढाचा (Conceptual Framework)

सिक्योरिटी शब्द अंग्रेजी भाषा के 'सिक्योर 'शब्द से बना है तथा इस सिक्योर की रचना लैटिन के दो शब्दों 'साइन' एवं 'क्यूरा' से की गई है। 'साइन ' का अर्थ 'विदाउट' (बगैर) तथा 'क्यूरा

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

'का अर्थ 'केयर ' (परवाह) से है इन दोनों को मिलाकर सुरक्षा से अर्थ निकाला गया है- 'निश्चित होकर समस्त राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा करना।' राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से राष्ट्रीय संपत्ति को तीन भागों में बांटा गया है। 1- इंफॉर्मेशन (सूचना) 2- प्रॉपर्टी (संपत्ति) तथा 3- पर्सनल (व्यक्ति)।[3]

इस प्रकार देखा जाए तो व्यक्ति किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा में केंद्र की भूमिका में है यदि व्यक्ति सुरक्षित रहेगा तो राष्ट्र सुरक्षित रहेगा यदि व्यक्ति निरोग रहेगा तो राष्ट्र निरोग रहेगा क्योंकि व्यक्ति भी एक संसाधन है जिसके माध्यम से राष्ट्र की उन्नति एवं विकास होता है। किन्तु कोरोनावायरस ने मानव संपदा को नष्ट किया है। देश की सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा हेतु यह कमी एक विकट समस्या का रूप धारण कर रही है।[4] औद्योगिक उत्पादन एवं सैनिक कार्यों हेतु अधिक से अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है।[5] किन्तु कोरोनावायरस महामारी के कारण बड़ी संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर एवं शिक्षाविदों की मृत्यु है। इससे राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई है।

अपारम्परिक खतराः महामारी (Unconventional Threats: Epidemic)

किसी भी देश के राजनयिकों के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें प्रतिरक्षा नीति को निर्मित करने से पूर्व पूर्व सैनिक विशेषज्ञों के सहयोग से वर्तमान एवं संभावित खतरों का अच्छी तरह से मूल्यांकन कर लेना चाहिए। खतरों का सही रूप से मूल्यांकन करने से पूर्व उनके स्रोतों उनके प्रकार तथा उनके समय के बारे में समुचित ज्ञान प्राप्त कर लेना राजनयिकों के लिए आपेक्षित है। संसाधनों के अपव्यय को रोकने के लिए भी ऐसा करना आवश्यक है। हमें केवल वाह्य खतरों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, अपितु आंतरिक खतरों से भी सजग रहना चाहिए। इन खतरों को उनकी प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे और असैनिक खतरा तथा सैन्य खतरा। सैन्य खतरा अपारम्परिक खतरा (Unconventional Threats) तथा पारम्परिक खतरा (Conventional Threats) दोनों प्रकार का हो सकता है।

अपारंपरिक खतरे के अंतर्गत बाढ़, भूकंप, प्राकृतिक आपदाएं एवं कोरानावायरस से उत्पन्न महामारियां आती है,यही भारत के खतरे के लिए गंभीर चुनौती है।

मानव- कल्याण एवं श्रीहनुमानबाहुक

साहित्य की रचना मानव कल्याण लिए हुई है। श्री गोस्वामी दास द्वारा रचित द्वादश ग्रंथ 1-श्री रामचरितमानस, 2-राम लला नहछू, 3-वैराग्य संदीपनी, 4-बरवै रामायण, 5-पार्वती मंगल, 6-

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

जानकी मंगल, 7-रामाज्ञा प्रश्न, 8-दोहावली, 9-कवितावली, 10-गीतावली, 11-श्री कृष्ण गीतावली, 12-विनय पत्रिका

जिसमें श्री हनुमान बाहुक स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है इसे कवितावली का एक परिशिष्ट भाग समझना चाहिए द्य नागरी प्रचारिणी सभा-काशी ने यह स्वीकार किया है द्य इस क्रम से उसने मानसेतर एकादश ग्रंथों को "तुलसी ग्रंथावली "के नाम से प्रकाशित भी किया है।[6] कवितावली उत्तरकांड के कुछ छन्द काशी में महामारी के समय लिखे गए हैं, जो वस्तुतः 147 से 183 तक कुल 36 छंद हैं। यह विशेषताया भूतनाथ श्री शिव, श्री राम जी और हनुमान जी को समर्पित है। इसका अंतिम पद है-

आश्रम बरन कलि -विबस विकल भये,
निज निज मरजाद मोटरी सी डार दी।
संकर सरोष महामारी ही तो जानियत,
साहिब सरोष दूनी दिन-दिन दादरू।।
नारि नर आरत पुकारत सुने न कोउ,
काहू देवतनि मिलि मोटी मुठि मार दी।
तुलसी सभि पाल, सुमिरि कृपालु राम,
समय सुकरुना सराहि सनकार दी।। कवितावली- 183।।''

आश्रम और वर्ण कलि के प्रभाव से विकलांग हो गए और सब ने अपनी-अपनी मर्यादा को भार स्वरूप समझ कर त्याग दिया। शिव जी का कोप तो महामारी से ही प्रकट है, स्वामी के कुपित होने के कारण ही संसार का दारिर्द्य दिनोंदिन बढ़ता जाता है। स्त्री-पुरुष सब आर्त होकर पुकारते हैं, किंतु उनकी पुकार कोई नहीं सुनता।

(मालूम होता है) किन्ही देवताओं में मिलकर मूठ चला दी थी (अभिचारका प्रयोग किया था), किंतु भयभीतों की रक्षा करने वाले कृपालु श्री राम को स्मरण करते ही उन्होंने अपनी करुणा की प्रशंसा करके उसे समय पर अपना काम करने का संकेत कर दिया (जिससे वह बीमारी बात-की-बात में चली गई)

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

श्री तुलसीदास जी महाराज 'महामारी' आदि प्राकृतिक आपदाओं (अपारम्परिक खतरे) को राष्ट्राध्यक्ष की अनीति परायणता का परिणाम मानते हैं तथा प्रजा वर्ग की मर्यादा हीनता (प्रकृति के शोषण) के कारण श्री शिव जी का कुपित होना मानते हैं।वह ऐसी महामारी (कोरोनावायरस जैसे) है, जिससे लोग दिनों-दिनये दरिद्र और अशांत होते जा रहे हैं "धर्म एव हतो हंति धर्मो रक्षति रक्षितः "इस न्याय से विदित होता है कि वर्णाश्रम विरोधियों के पापों के कारण देवताओं ने मानो एक साथ मिलकर बहुत भयंकर जादू कर दिया है जैसा कि वर्तमान समय में दिखाई दे रहा है। गोस्वामी जी का मानना है कि आश्रित रक्षक होने के कारण कृपालु श्री रामचंद्र जी सभी विपत्तियों को दूर कर सकते हैं। वस्तुतः गोस्वामी जी की प्रार्थना पर ही वह महामारी नष्ट हुई यह काशी वासियों में भी कहा सुना जाता है।

श्री हनुमान बाहुक गोस्वामी दास द्वारा रचित 44 छन्दों वाला स्त्रोत है। इसकी की रचना लोक भाषा में इसीलिए की गई है, कोइ भी व्यक्ति इसका पाठ करके लोक और परलोक की इच्छा पूर्ण कर सकें।

विमर्श- बाहुक से तात्पर्य बाहु की पीड़ा से है इसके निवारण हेतु श्री गोस्वामी नेश्री हनुमान जी से प्रार्थना की गई है, जिसके कारण इसका नाम हनुमान बाहुक स्त्रोत हुआ है।बाहु-पीड़ा की अतिशयता के कारण गोस्वामी जी अत्यंत व्यथित हो गए थे कोई कहता है कि उनके द्वारा श्री राम भक्ति के अधिक प्रचार-प्रसार से कलयुग कुपित हो गया था क्योंकि यह युग अधर्म का मित्र है- "कलिनाऽधर्ममित्रेण" यह पुराण का वचन है। राम नाम धर्म का मूल है धर्म रूपी वृक्ष का बीज है- "बीजं धर्मद्रुमस्य" (हनुमन्नाटक मंगलाचरण)। कोई कहता है कि संपूर्ण लौकिक-वैदिक वाड्मय के तत्त्व को लोक भाषा ग्रंथ श्री रामचरितमानस में स्थापित कर देने के कारण काशी के पण्डिम्मन्य लोग इनसे बहुत चीढ़ गए थे।

अतः इनके ऊपर कोई तांत्रिक अभिचार करा दिए थे, जिससे ये बाहुपीड़ा के साथ फोड़े फुंसियों से ग्रस्त हो गए थे। उसके निवारण है इन्होंने औषधि, यंत्र-मंत्र, टोटका आदि अनेक उपाय किए। किन्तु घटने के अलावा और भी पूरा शरीर पीड़ामय हो गया था। जब कोई देवी-देवता सहायक न हुए तब इन्होंने उक्त स्त्रोत के द्वारा परमरक्षक श्रीहनुमान जी से प्रार्थना की। समीक्षकों का कथन है कि 35वें पद तक के पाठ से तत्काल संपूर्ण व्याधि मिट गई थी। जैसे स्वयं कहते हैं-

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

घेरि लियो रोगनि कुलोगनि कुजोगनि ज्यों,
बासर जलद घन घटा धूकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये ज्यों ,
सरोष विनु दोष धूम- मूल मलिनाई है।।
करुणानिधान हनुमान महा बलवान !
हेरि हँसि हाँकि फूकि फौजैं तैं उडा़ई है।
खायो हु ते "तुलसी" कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरी किसोर राखे बीर बरियाई है।।35।। श्रीहनुमानबाहु क

रोगों ने, कुछ लोगों ने, और कुत्सित ग्रहदशा के योगों ने मुझे ऐसा घेर लिया है कि जैसे दिन में मेघों की घनघोर घटाएं आकाश मे सफलतापूर्वक दौड़ती हैं। पीड़रुपी जल की वर्षा से जवास वृक्ष की भाँति मैं जलाया जा रहा हू। किसी दोष के बिना यह सब मुझ पर कुपित हैं (किन्तु मैं यह मानता हू कि) जैसे मेघ के कारण वाष्प है, वैसे ही मेरी मालिनता भी इन कष्टों का मूल है।

एक करुणानिधान महाबली श्री हनुमान जी महाराज! मेरी ओर देखकर आप हँस दिए और ललकार कर एक ही फूक मेरे शरीर पर लगाई, इतने से ही आपने उन त्रितापरुपी फौजों (सेवाओं) को उड़ा दिया। कुरोग रुपी ये नीच राक्षस आपके तुलसीदास को खा लिए होते किन्तु हे केशरीकिशोर! हे वीर!! आपने अपनी प्रबलता से मेरी रक्षा कर ही दी।

ऐसा सुना जाता है कि पहले बरतोर से गोस्वामी जी की बाई भुजा के मूल में घाव हु आ पुनः उसी दशा में अभिमानी पंडितों ने और तांत्रिकों द्वारा प्रेत बाधा अथवा किसी-किसी मत से काल भैरव की बाधा कराई गई। (जैसे चीन ने पूरे विश्व पर आधिपत्य करने के लिए अपने प्रयोगशाला में कोविड-19 की उत्पत्ति कराई।) ऐसा हु आ क्यों? इस तर्क का समाधान है-

कुजोगनि

आजकल के शिक्षित लोग भी शास्त्रीय वचन की उपेक्षा कर उसमें अपने कल्पित तर्क को उचित ठहराते हैं। जबकि विश्व भर के मनीषी इस बात पर एकमत हैं कि ज्योतिष शास्त्र एक अद्भुत विज्ञान है, जिसमें सामुद्रिक शास्त्र और गणित ज्योतिष का मानव जीवन से बहु त गहरा संबंध है। भारत के अतिरिक्त कीरो आदि पाश्चात्य विद्वान भी शारीरिक रचनाओं और जन्म नक्षत्र के

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

आधार पर जीवन के सभी पक्षों को समझ कर भविष्यवाणी करते हैं। श्री तुलसीदास जी स्वयमेव यह संकेत करते हैं कि हमारे जन्म नक्षत्र नक्षत्रों के दोषों के कारण इस वृद्धा अवस्था में भी मैं इतनी भयंकर वेदना सह रहा हूं। इसलिए वह अपने प्रारब्ध भोग पर ही बल देते हुए कहते हैं- "यद्यपि इस जीवन में मुझसे कोई ऐसा दुष्कर्म नहीं हुआ तथापि कारण के बिना कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती है।" अतः किसी पूर्व जन्म का कोई दोष अवश्य है जो-

बरसत वारि पीर जारिये जवासे ज्यों,
सरोष बिनु दोष धूम्मूल मलिनाई है।

जल से वाष्प और वाष्प से मेघ और नींद से वर्षा की भॉति शारीरिक और मानसिक विकारों से वासना, उससे इंद्रियतृप्ति और उससे दोष-पाप और उसके भी परिणाम त्रयताप हैं। (यहां पर उल्लेख करना समीचीन होगा की कोरोनावायरस का प्रभाव प्रगतिशील पश्चिमी देशों संयुक्त राज्य अमेरिका फ्रांस ब्रिटेन आदि देशों में अधिक प्रभाव दिखाई दिया, जबकि तुलनात्मक रूप से इस महामारी का भारत में कम प्रभाव दिखाई दिया। भारत में भी ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में अधिक प्रभावी रहा।)

प्रारब्ध भोग की अनिवार्यता में ईश्वर शरणागति का क्या योगदान है? इस जिज्ञासा को समाधान करते हुए गोस्वामी जी कहते हैं

"करुनानिधान---------- बरियाई है।"

श्री राम शरणागति का फल अमोघ होता है। अदृश्य को आज तक कोई पढ़ नहीं सका है। ज्योतिष शास्त्र भी लक्षण के अनुसार फल का कथन करते है किन्तु उसमें एक रेखा भी सुधार कोई साथ नहीं कर सकता है। ब्रहमा की सृष्टि में नियत के अनुसार नियम लागू है। सर्वोच्च न्यायालय विवेचना संग्रह (फाइल) के आधार पर किसी को मृत्युदंड भले सुना दे किन्तु उसे क्षमा कर देना न्यायालय के क्षेत्राधिकार से बाहर होता है। मात्र राष्ट्राध्यक्ष को किसी को भी जीवन दान देने और लेने का अधिकार होता है।

इस प्रकार गोस्वामी श्री तुलसीदास जी बाहुपीड़ा निवृत्ति के लिए अंतिम उपास्यस्वरुप सर्वसमर्थ श्री राम दूत को अनन्यता से वरण किया और इससे उन्हें चमत्कारी लाभ हुआ। जैसे दिन में मेघ घनघोर घटाओं से घिर आवें चारों ओर अंधेरा छा जाए, वर्षा भी झकझोर कर चालू हो गई

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 5, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-4044

हो, इतने में कोई प्रतिकूल वायु जोर से चलकर उन बादलों को तितर-बतर कर दे, पुनः निर्मल आकाश में सूर्य का वही प्रकाश भर जाए, वही दृश्य गोस्वामी जी की के समक्ष इस 35 वें ये सब पद की प्रार्थना से उपस्थित हुआ है-

खायो हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि
केसरी किसोर राखे बीर बरियाई है।

खाये हुतो-का यही तात्पर्य है कि जैसे द्रोपदी के लिए कृष्ण वस्त्रा अवतार हो गए,प्रहलाद की रक्षा के श लिए श्री नृसिंह स्वामी के रूप में तत्काल उसी स्तंभ से प्रगट हो गए, गजराज के लिए निमिष भर की देर न लगी, उसी प्रकार गोस्वामी जी की भी निराशा के अंतिम क्षण में श्री राम दूत ने हुंकार भर कर एक फूंक मारी बस छूमंतर हो गई सभी पीड़ा। इसके बाद गोस्वामी तुलसीदास जी बज्रांगबली के चरणों में गिरकर बहुत रोए और कहने लगे, "हे नाथ! यह रोग तो मुझे खा ही लिया होता अर्थात् मार ही डालता। यह रोग नहीं राक्षस था जो आपकी हवा से ही भाग गया। अब मैं पूर्ण स्वस्थ हूं ----।"

निष्कर्ष

श्रीहनुमानबाहुक महामारियों के निवारण के कवच है। अमेरिका में कोराना महामारी बढ़ने लगी तो, वहां पर भी शान्ति के लिए वैदिक मंत्रों का पाठ कराया गया। इस महामारी से प्रथम एवं द्वितीय विश्व-युद्ध में जितने लोग नहीं मारे गए थे, उससे कहीं अधिक मौतें कोराना महामारी से हुई है, और हो रही है। इसके लिए पूज्यपाद श्री गोस्वामी तुलसीदास जी की भाँति निष्ठावान होना आवश्यक है। अन्यथा एक सूक्ति प्रसिद्ध है-

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे भेषजे दैवज्ञे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

अर्थात्-मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, दैवता, औषधि देवज्ञ और गुरु के प्रति जिसकी जैसी भावना होती है, वहीं फलित भी होता है।

सन्दर्भ सूची

1. John J. Clark: The New Economics of National Defence p-11.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

2. जे.एम.श्रीवास्तवः राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रकाशकः चन्द्र प्रकाश एण्ड कम्पनी, सप्तम संस्करण-2003 पृष्ठ- 1.
3. वहीं पृष्ठ- 2.
4. K. Subramanyam: Our National Security p. 21.
5. Chanakya Defence Annual, 1972] p.41.
6. आचार्य रामदेव शास्त्रीः श्रीहनुमानबाहुक भक्ति भूषण भाष्य, प्रकाशकः कर्मवीर प्रकाशन पुष्प, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, 2006.
7. ''कवितावली के कुछ प्रतियों में 177 छन्द मिलते हैं।काशी- नागरी प्रचारिणी सभा की प्रति में 183 छन्द हैं।अतः 183 छन्द रखे गए हैं।
8. श्रीरामचरितमानस गीता प्रेस।
9. कवितावली गीता प्रेस।
10. श्रीहनुमानबाहुक गीता प्रेस।
11. आचार्य कृपाशंकर रामायणीः श्रीरामचरितमानस कथा-सुख- सागर, प्रकाशक श्रीगंगादास कृपाशंकर सेवा संस्थान, रामआसरे बगिया श्री अयोध्याजी।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.